13 वर्ष के असहनीय दर्द से राहत

एम्स भोपाल में एक मिमी के दुर्लभ ट्यूमर की जटिल सर्जरी, अंगुली कटने से बची

भोपाल, 15 जनवरी. 59 वर्षीय एक मरीज पिछले 13 साल से हाथ की एक अंगुली के सिरे पर असहनीय दर्द से पीड़ित था. एम्स भोपाल में की गई जटिल सर्जरी से उसे असहनीय दर्द से राहत मिली, वहीं उसकी अंगुली कटने से बच गई.

असहनीय दर्द से पीड़ित मरीज ने बीते वर्षों में देश के विभिन्न अस्पतालों में इलाज कराया, जहां नर्व टेस्ट, इमेजिंग जांच, दर्द निवारक उपचार तथा सर्जरी तक की गईं, लेकिन दर्द का वास्तविक कारण सामने नहीं आ

सका और पीड़ा लगातार बनी रही. लंबे समय तक राहत न मिलने के कारण मरीज मानसिक रूप से भी निराश हो चुका था. दर्द इतना असहनीय था कि मरीज अंगुली कटवाने के लिए एम्स भोपाल पहुंचा.एम्स भोपाल के बर्न एवं प्लास्टिक सर्जरी विभाग में विस्तृत क्लिनिकल परीक्षण के दौरान एडिशनल प्रोफेसर डॉ. गौरव चतुर्वेदी ने एक दुर्लभ ग्लोमस ट्यूमर की आशंका जताई. समग्र परीक्षण के उपरांत सर्जरी की योजना बनाई गई.

सर्जरी के दौरान अंगुली के पल्प हिस्से में मौजूद मात्र 1 मिलीमीटर आकार का ट्यूमर निकाला गया. सर्जरी के तुरंत बाद मरीज को दर्द से पूरी राहत मिली. अंगुली को काटने की आवश्यकता नहीं पड़ी और हाथ की सामान्य कार्यक्षमता भी पूरी तरह बहाल हो गई.

विभागाध्यक्ष प्रो. मनाल मोहम्मद खान ने बताया कि ग्लोमस ट्यूमर सामान्यतः नाखून के नीचे पाए जाते हैं, जबकि अंगुली के पल्प में इनका पाया जाना अत्यंत दुर्लभ है, जिसके कारण ऐसे मामलों में वर्षों तक निदान नहीं हो पाता.

भोलेनाथ का पूजन कर महिलाओं ने गाए भजन

▶ दादाजी धाम मंदिर में दो दिन मनाई मकर संक्रांति

भोपाल, 15 जनवरी. रायसेन रोड स्थित पटेल नगर में दादाजी धाम मंदिर में मकर संक्रांति पर्व बुधवार और गुरुवार को मनाया गया. महिला भक्तों द्वारा पूजन, भजन-कीर्तन किए.

गुरुवार को पंडित राजेंद्र पलिया के सानिध्य में भगवान भोलेनाथ का रुद्राभिषेक किया गया. इसके बाद महिला भक्तों ने पूजन किया पूजन और संगीतमय भजन-कीर्तन किया. कार्यक्रम के अंत में ट्रस्ट द्वारा सभी भक्तों को चूरमा के लड्डू का प्रसाद वितरित किया गया.

मकर संक्रांति के पावन अवसर पर भक्तों द्वारा मंदिर में खिचड़ी दान, अन्य अनुदान के साथ-साथ लड्डू, तिल एवं गुड़ अर्पित किए गए.

पुस्तक 'दिल की बात' का विमोचन आज

भोपाल, 15 जनवरी. ज्ञान और प्रेरणा पर केन्द्रित पुस्तक दिल की बात का विमोचन शुक्रवार, 16 जनवरी को होगा. कुशाभाऊ ठाकरे अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन सेंटर के हॉल नंबर 2 में आयोजित कार्यक्रम में वरिष्ठ लेखक एवं चिंतक सतीश शर्मा की पुस्तक 'दिल की बात' का विमोचन किया जाएगा. ड्रीम्स बुक्स पब्लिकेशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक व्यक्तित्व निर्माण और जीवन में सकारात्मक ऊर्जा बनाए रखने के महत्व पर केंद्रित है. पुस्तक में शर्मा द्वारा लिखित प्रेरक संदेश और अनुभवों का संकलन पाठकों के लिए नई दिशा और उत्साह का स्रोत है. लेखक की यह रचना सरल भाषा में गहरे विचारों को प्रस्तुत करती है.

देश-विदेश के कलाकार दिखाएंगे महाभारत युद्ध

▶ भारत भवन में आज से देश का सबसे बड़ा आयोजन

नवभारत प्रतिनिधि

भोपाल, 15 जनवरी. महाभारत पर आधारित देश का सबसे बड़ा सांस्कृतिक आयोजन भारत भवन में 16 से 24 जनवरी तक होने जा रहा है. समागम वर्तमान की युद्धकालीन परिस्थितियों में शांति सौहार्द और मानवता का संदेश देने के उद्देश्य से आयोजित किया गया है.

आयोजन में महाभारत युद्ध की कथा को आधुनिक स्वरूप में नृत्य नाटक संगीत और फिल्मों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाएगा. इसके साथ ही कार्यक्रम में देश और विदेश में बनी महाभारत और युद्ध थीम पर आधारित फिल्मों का प्रदर्शन होगा.

इन फिल्मों का होगा प्रदर्शन

- 17 जनवरी को 1989 में रिलीज पिटर ब्रूक की महाभारत
- 18 को 1929 में रिलीज ए थ्रो ऑफ डाइस (मूक फिल्म)
- 19 जनवरी को 1985 में रिलीज कम एंड सी
- 20 जनवरी को 2022 में रिलीज ऑल क्विट आन द वेस्टर्न फ्रंट
- 21 जनवरी को 1993 में रिलीज शिंडलर्स लिस्ट

रातीबड़ में बुजुर्गों का सम्मान

भोपाल, 15 जनवरी. ग्राम रातीबड़ के मांगलिक भवन में गुरुवार को जय हो सेवा समिति के द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में विधायक रामेश्वर शर्मा ने समिति अध्यक्ष एवं भाजपा रातीबड़ मंडल अध्यक्ष मनोज कामवार के साथ आसपास के 15 गांव के 500 से अधिक बुजुर्गों का माला पहनाकर एवं कमल भेंट कर सम्मान किया. समिति के अध्यक्ष मनोज कामवार, मंडल अध्यक्ष भाजपा रातीबड़ ने बताया कि मकर संक्रांति पर सूर्य यज्ञ का आयोजन 12 वर्षों से ग्राम रातीबड़ में किया जा रहा है. कार्यक्रम के प्रारंभ में विधायक शर्मा ने सूर्य मंदिर में पूजा की. समिति अध्यक्ष ने विधायक शर्मा का 51 किलो की फूलमाला से स्वागत किया.

सफेद तिल से होगा बटेश्वर का श्रृंगार

भोपाल, 15 जनवरी. श्रीबड़वाले महादेव मंदिर सेवा समिति द्वारा शुक्र प्रदोष एवं मकर संक्रांति के अवसर पर बाबा बटेश्वर का सफेद तिल से श्रृंगार किया जाएगा. समिति के संजय अग्रवाल एवं प्रमोद नेमा ने बताया कि प्रदोष काल में पिसी तिल एवं गुड़ के पानी से रुद्राभिषेक कर बाबा का स्वरूप तिल से बनाया जाएगा. 2 क्विंटल फूल एवं रत्नों से श्रृंगार कर रात्रि 10 बजे महाआरती होगी.

मिलन समारोह 24 को

भोपाल. कायस्थ मंडल नगरीय क्षेत्र एवं वेलफेयर सोसायटी के 20 वर्ष पूर्ण होने पर चित्रांश परिवार मिलन समारोह 24 जनवरी को शाम 5.30 बजे होटल नंदन पैलेस में होगा.

पोंगल उत्सव : 27 से अधिक व्यंजनों का स्वाद

▶ पलाश रेसीडेंसी में दिखी दक्षिण भारत की झलक

नवभारत प्रतिनिधि

भोपाल, 15 जनवरी. पोंगल पर्व का उत्साह पलाश रेसीडेंसी के अमराई प्रांगण में गुरुवार को पूरे रंग और स्वाद के दिखा. बुधवार से शुरू हुए चार इस दिवसीय पोंगल फूड फेस्ट ने भोजपुरियों को एक ही जगह दक्षिण भारत का संपूर्ण पारंपरिक अनुभव दे दिया.

केले के पत्तों पर परोसे जा रहे अस्सल व्यंजन, स्वागत में लगाया तिलक और पारंपरिक वेशभूषा ने मेहमानों को सीधे तमिलनाडु के गांवों की याद दिला दी. पोंगल के इस उत्सव के लिए पलाश रेसीडेंसी को खास तौर पर फूलों,

रंगोली और केले के पत्तों से सजाया गया है.

वहीं मेहमानों के स्वागत में करुम्बु सारु यानी गन्ने का रस और नारियल पानी परोसा जा रहा है. फेस्ट में तमिलनाडु की विलेज थीम पर बना सेल्फी प्वाइंट सबसे बड़ा आकर्षण बना हुआ है. जहां परिवार और बच्चे जमकर फोटो खिंचवा रहे हैं. इसके साथ ही फेस्ट में कांजीवरम सहित दक्षिण भारतीय हस्तशिल्प साड़ियों और मिलेट्स का भी दर्शक खूब लुफ्त उठा रहे हैं.

केरल से मंगाए मसाले : बड़ी थाली में सक्करै पोंगल, वेन पोंगल, पुली सदम, पाल पायसम, मसाला वड़ा, झंगरी से आगे 27 से भी अधिक व्यंजनों की पंगत देखने को मिल रही है.

साहित्य इतिहास और कल्पना की संगत में सोल क्लाइमेट पुस्तक पर चर्चा

सोल क्लाइमेट संवाद में नई सोच की उड़ान

नवभारत प्रतिनिधि

भोपाल, 15 जनवरी. एक शाम जिसमें इतिहास ने कल्पना का हाथ पकड़ा और साहित्य ने सवालों की नई दुनिया में पहुंचाया. यह अवसर था क्लब लिटराटी द्वारा आयोजित एक लाइव इंटरैक्टिव सत्र का.

सत्र में ऑस्ट्रेलियाई उपन्यासकार इनेज बराने ने अपने चर्चित उपन्यास सोल क्लाइमेट पर विचार साझा किए.

कार्यक्रम का संचालन डॉ. सीमा रायजादा ने किया. बराने ने उपन्यास के जन्म की कहानी से चर्चा की शुरुआत की. उन्होंने बताया कि सोल क्लाइमेट की

प्रेरणा प्रसिद्ध तुर्क लेखिका हालिदे एदिब की 1935 में हुई भारत यात्रा से मिली. बराने ने इस ऐतिहासिक यात्रा को दोबारा पढ़ा और शोध को कल्पना के साथ जोड़ते हुए एक ऐसी रचना तैयार की जो कई कालखंडों और संस्कृतियों के बीच संवाद स्थापित करती है.

सत्र में राष्ट्रवाद, आस्था, फेमिनिज्म और राजनीतिक आदर्शवाद में छिपी नैतिक जटिलताओं पर बातचीत हुई. बराने ने माना कि विभिन्न सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखना चुनौतीपूर्ण है क्योंकि हर समाज की संवेदनाओं को समझना जरूरी होता है.

उन्होंने कहा कि कुछ प्रश्नों का समाधान साहित्य नहीं देता, बल्कि पाठक को सोचने पर मजबूर करता है.सत्र का समापन इस विचार के साथ हुआ कि सोल क्लाइमेट किसी निष्कर्ष का दावा नहीं करता बल्कि एक ऐसी यात्रा है जो पाठक को सोचने और महसूस करने की आजादी देती है.